[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3644

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मुगल कालीन रंग निर्माण –प्रक्रिया (जहाँगीर काल के संदर्भ में)

रेखा धीमान
शा. हमीदिया कला एवं वाणिज्य महाविद्यालया, भोपाल

मुगल चित्रकला सम्पूर्ण एषिया में स्वतंत्र और महत्वपूर्ण पहचान बनाये हुए है। तैमूर वंष की पांचवी पीढ़ी के बाबर ने सन् 1527 में भारत के कुछ हिस्सों पर अपना आधिपत्य कर मुगल संस्कृति को स्थापित किया। जिसे हुमांयू , अकबर, जहाँगीर, षाहजहाँ और औरंगजेब आदि षासकों ने विस्तार दिया। इस समय सभी कलाओं का समुचित विकास हुआ। षाहजहाँ के षासन काल तक मुगल कालीन चित्रकला चरम – वैभव को प्राप्त थी। इस पर ईरानी, चीनी और पष्चिमी कला षैली का प्रभाव पडा। इस समय चित्रकला लघु और स्फुट चित्रों के रुप प्रभावषाली रही। **'जहाँगीर काल (1605 से 1627 ई. तक) चित्रकला लघुचित्रों के रुप में अपने यौवन पर थी।'**[1] जहाँगीर ने अपने षासनकाल में चित्रषालाओं की स्थापना की और चित्रकारों को संरक्षण प्रदान किया। चित्रषालाओं में वरिष्ठ चित्रकार षिष्यों को व्यवहारिक रुप से अध्ययन कराते थे ही साथ ही नसाब तालीम अनुसार **' लघुचित्रों में रंगामेजी '** महत्वपूर्ण अध्याय की तालीम दिया करते थे।यही कारण था कि जहॉगीरकालीन चित्रकला चरमसीमा को पाप्त हुई।**'मरवादीद ने सम्पूर्ण मुगलों की चित्रकला और लिपी को रंग मिश्रण का विधान सुलभ कराया।** [2] इसके अंतर्गत रंग निर्माण प्रकिया और रंग संयोजन को विषेष महत्व दिया जाता था। वरिष्ठ चित्रकार षिष्यों को स्वयं के निरीक्षणमें प्राकृतिक, खनिज और रासायनिक raw material एकत्रित करने का प्रषिक्षण देते थे। जहाँगीर काल में रंग निर्माण का कार्य भारत में ही होता था और अन्य देषों को निर्यात किया जाता था। अतः रंग निर्माण पद्यति पर भी विषेष ध्यान दिया जाता था।

किसी भी षैली के विकास के लिये रुपाकार के साथ ही रंगों का भी प्रमुख स्थान है। वे चित्र में सौंदर्यवृद्धि और शाष्वतता प्रदान करने में सहायक होते हैं। रंग संयोजन और चित्रण विधान किसी भी षैली की विषिष्टता का परिचायक है। सौंदर्यात्मक एवं रचनात्मकता की कसौटी ही **रंगामेजी** और **रंगयोजना** है जो चित्रकार की पहचान कराती हैं।मुगल षैली में रेखांकन, टिपाई, गदकारी (रंगामेजी) ,खुलाई (उन्मीलन) , परदाज से लेकर मीनाकारी तक सभी में रंग एक महत्वपूर्ण तत्व है। भारतीय रंग परम्परा का अनुसरण ईरान, फिनिषियन, रोम तथा मिश्र आदि देषों ने किया।

अकबर कालीन रंगामेजी की समाग्रियों के निर्माण में उन्नति होना प्रारम्भ हुई। इस समय कागज फारस मे आता था तथा इस समय की रंगामेजी को तीन भागों में विभक्त किया 1. चमकदार रंगामेजी 2. बिना चमक युक्त रंगामेजी और 3. कमजोर रंगोमेजी

इस समय से रंगामेजी की उन्नति प्रारम्भ हुई और जहाँगीर काल में चरमोत्कर्ष पर थी। **जहाँगीर कालीन चित्रों में मुख्यतः 14 प्रकार के रंगों का उल्लेख मिलता है।**[3] जिनमें 5 प्रकार के मूलरंग माने गये हैं
सफेद, 2. लाल, 3. पीला, 4. काला तथा 5. हरा।

इन 5 रंगों के मिश्रण से सैकड़ों रंग तैयार किये जाते हैं। रंगामेजी का चयन चित्रकार की दक्षता पर निर्भर करता है। जहाँगीर कालीन चित्रकार रंगमिश्रण या रंगचयन को गोपनीय रखते थे।

चित्रकार के सहायक (शिष्य) निर्माण हेतु प्रकृति प्रदत्त वनस्पति, खनिज तथा रासायनिक द्रव्यों (Raw materials) को एकत्रित करते थे और वही रंगों का निर्माण भी करते थे। जहाँगीर कालीन चित्रों की प्रत्येक अवस्था में सफेद रंग मिश्रण कर अनेक रंग बनाये जाते थे जैसे 'पाण्डूरंग', 'पद्मरंग', 'कपोतरंग', 'गौरवर्ण', 'पिंगलरंग', एवं लाखी रंग आदि। इसके अलावा वे सोना, चांदी, पीतल, तांबा, लोहा, अबरक, रांगा, लाजवर्द, कहरबा, सिंदूर, हरताल, हर्रा लाख, नील आदि से भी रंग प्राप्त करते थे।

जहाँगीर काल में हिन्दु एवं मुस्लिम दोनों ही प्रकार के चित्रकार थे। जिनमें 'बसावन', रंग मिश्रण में अद्वितीय माना जाता था।[4] वे अकबर एवं जहाँगीर –काल के प्रसिद्ध चित्रकार रहे हैं। इस समय रंगों को उर्दू तथा फारसी दोनों नामों से माने जाते थे जैसे तूस, अल्चा, बिरंजी (पीतल रंग), किरमिची (हरालाल युक्त), काई, गुले पुंबई (कपाश के फूल के समान), संदली

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

(चंदन), बदामी, अगरवानी (बैंगनी), तोतली (तोता समान), सेबी (सेब समान), आबी (पानी समान), जिगरी (हृदय समान), चेहरई (हल्का गुलाबी), अम्बोई (आम समान), मुश्की (कश्तूरी) एवं फाख्तई (फाख्ता पक्षी समान) आदि।

रंग निर्माण प्रक्रिया –

जहाँगीर काल में शिष्य की प्रारम्भिक शिक्षा रंग निर्माण तकनीक से ही प्रारम्भ होती थी, जो कि उनकी छोटी आयु से ही प्रारम्भ होती थी। जब वह चित्रांकन योग्य हो जाता था तो उसे चित्रशाला भेज दिया जाता था। वहाँ वह सर्व प्रथम चित्र सामग्री से परिचित होता था। जिसमें वह कागज तैयार करना, रंग निर्माण एवं चित्र निर्माण पश्चात् मुलम्मा चढ़ाने की विधि से परिचित होता था। मुलम्मा चढ़ाने के लिए वे हकीक पत्थर का उपयोग करते थे।

रंग निर्माण हेतु सामान्यतः निम्न प्रक्रियाओं से गुजरना होता है :–

1. रंग सामग्री एकत्रित करना
2. पृथककरण
3. गलाना
4. उबालना
5. आसवन
6. शुष्कीकरण
7. बाइंडर

रंग निर्माण कार्य विशेषतः चित्रकारों के सहायक उनके निर्देशन में करते थे। **रंग मिश्रण में वे रंगों को घोंटते, छानते, पानी में गलाते, आग पर पकाते, सुखाते तथा चित्र निर्माण के लिये सुरक्षित रखते थे।**[5] विभिन्न प्रकार के रंगों की निर्माण प्रक्रिया वस्तु–प्रकृति के अनुसार भिन्न–भिन्न होती थी।

सफेद रंग – सफेद रंग प्रमुख रंगों में से एक है। **इसे बनाने के लिये खड़िया मिट्टी के चूर्ण को खरल में ड़ालकर नारियल के पानी के साथ घोटा जाता था।**[6] घोंटते–घोंटते जब वह लेई जैसा हो जाता था। तब उसमें गर्म पानी मिलाकर छानते थे और उसे किसी समतल सतह पर रखते थे। जब अतिरिक्त पानी पृथक हो जाता था तो उसमें नीम का गोंद या बबूल के गोंद को मिलाकर सुरक्षित रख लिया जाता था।

स्वर्ण रंग – मुगल काल में स्वर्ण रंग का प्रयोग बहुतायत से देखने को मिलता है। यह रंग बनाने के लिये स्वर्ण पत्र (बरक) के छोटे–छोटे टुकड़े करके महीन रेत के साथ थोड़ा पानी डालकर खरल करते थे। खरल पश्चात् वह लेई समान गाढ़ा हो जाता था। तब इसमें पानी डाला जाता था। जिसमें रेत और स्वर्ण अलग हो जाता था। स्वर्ण रंग को हाथी–दांत से रगड़ा जाता था। जिससे स्वर्ण में अधिक चमक आ जाती थी। इस रंग का प्रयोग वस्त्रों के अलंकरण, गहनों और हाशिये की नक्काशी में देखने को मिलता है।

पीला रंग – पीला रंग प्योड़ी (मेग्निशियम) और पंजाब की मुल्तानी मिट्टी से निर्मित किया जाता था। इसके अलावा हरताल को तीन दिन तक पानी रखा जाता है। फिर पानी निथार दिया जाता था। इसके पश्चात् नीम के गोंद के साथ पानी में घुटाई की जाती थी। इस प्रकार पीला रंग तैयार होता था।

वनस्पतिक रंग तैयार करने के लिए ढाक के फूलों को एकत्र कर फूलों को तीन चार दिन तक पानी में गले रहने दिया जाता था। फिर आग पर चढ़ाकर पकाया जाता था। फिर पानी को छानकर किसी बड़े पात्र में रखकर धूप में सुखाया जाता था फिर नीम का गोंद मिलाकर सुरक्षित रख लिया जाता था। इसके अलावा हारसिंगार और केसर से भी पीला रंग बनाया जाता था। जब जहाँगीर काश्मीर भ्रमण पर जाया करते थे। तो वहाँ से रंग निर्माण हेतु केसर लाया करते थे। पीला रंग तैयार करने के लिये गाय को आम की पत्ती खिलाई जाती थी उसके पेशाब को एकत्रित कर पकाया जाता था जब वह गोंद हो जाता था तो उसमें नीम का गोंद मिलाकर घोटा जाता था।

लाल रंग – लाल रंग जहाँगीर को बहुत पसंद था। हिर्मुजी और गेरू को अकलतरा के पानी में डालकर रखा जाता था। दूसरे दिन इसे निथार कर अरबी गोंद का पानी या नीम का गोंद मिला दिया जाता था। इस प्रकार लाल रंग तैयार हो जाता

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

था। लाख के रस में निर्मित रंग को लाक्षावदी कहा जाता था। इसके अलावा यह रंग सिंदुर, जिंक ऑक्साइड तथा मांजूफल के मिश्रण से भी तैयार किया जाता था।

नीला रंग – नीला रंग नील Indigo के वृक्षों की पत्तियों को धूप में सुखाकर पीसा जाता था। पानी में तीन–चार दिन तक पड़ा रहने दिया जाता था। उसको मसलकर पानी डालकर छान लिया जाता है और समतल स्थान पर पात्रों में रखकर छोड़ दिया जाता था। नील निचली सतह में बैठ जाता था। इस रंग को मजिष्ठ भी कहा जाता था।
हरा रंग – पीले और नीले रंग के मिश्रण से हरा रंग बनाया जाता था। **हरा रंग 'तांबे के मुरचे' से भी तैयार किया जाता था। जिसे जंगाल कहा जाता था।**[7] हरा रंग कई प्रकार का होता था जैसे उन्नावी, तोतली (तोते समान), अल्फी (हरे घास समान), लाजवर्दी, तरबूजी, मूंगिया हरा तथा जंगारी इत्यादि।

नारंगी – यह रंग मेहंदी की पत्तियों से निर्मित किया जाता था। इसकी पत्तियों को कपड़े को पोटली में बांधकर पानी में उबाला जाता था। इसके अर्क को अधिक समय तक उबालकर पानी वाष्पित कर देते थे। इसमें गुड़ और कसीस को बराबर मात्रा मिलाकर ठंड़ा होने दिया जाता था फिर इसे थाल में रखकर धूप में सुखाते थे। यह पपड़ी के रूप में तैयार हो जाता था। इसे खरल में डालकर पीस लेते थे और चित्र बनाने के काम में लाते थे।

काला रंग – यह रंग काजल बनाने की विधि द्वारा तैयार किया जाता था। इसमें अलसी या अरंडी के तेल से बनाया जाता था। काजल तैयार होने पर थोड़े से पानी के साथ घोंटा जाता था। फिर इसे सुखाकर गोंद मिलाकर रंग के रूप में प्रयोग किया जाता था।

रंगों की प्रकृति अनुसार अनेक रंगों का निर्माण विभिन्न विधियों से किया गया। रंगों के संयोजन से सैकड़ों रंग निर्मित किये गये। इस समय चित्रकारों ने विश्वप्रसिद्ध चित्रों का सृजन किया। चित्रों को और अधिक सौंदर्यपूर्ण बनाने के लिए उन पर 'मुलम्मा' चढ़ाया जाता था। यही कारण था कि जहाँगीर कालीन चित्र रंग और विषयों की विविधता के कारण अधिक समृद्धशाली हो सके।

अर्थ	नसाब तालीम	–	पाठ्यक्रम
	रंगामेजी	–	रंगों की मिलावट
	मुलम्मा चढ़ाना	–	चित्र को पत्थर से घिसाई कर चमक उत्पन्न करना।

संदर्भ ग्रंथ –

1. *वर्मा अनिवाश बहादुर* *भारतीय चित्रकला का इतिहास* *पृ.सं. 127*
2. *रोजर्स एण्ड बेबरीज* *मेमोरीज ऑफ जहाँगीर* *पृ.सं. 261*
3. *दास रायकृष्ण* *भारतीय चित्रकला* *पृ.सं. 89*
4. *शर्मा हरिवंशराय एवं फिदा हुसैन खान* *आइने अकबरी अनुवाद* *पृ.सं. 105*
5. *खेमराज श्री कृष्णदास* *भारत की कारीगरी* *पृ.सं. 78*
6. *ब्रजभूषण* *दी वर्ल्ड ऑफ इण्डियन मिनिएचर* *पृ.सं. 25*
7. *पर्सी ब्राउन* *इण्डियन पैंटिंग अण्डर दी मुगल्स* *पृ.सं. 190*